पंचम अध्याय

" 'धरती धन अपना' उपन्यास का भाषा-शिल्प"

पंचम अध्याय

" 'धरती धन न अपना' उपन्यास का भाषा-शिल्प"

विषय-प्रवेश -

सभी जीव-प्राणियों में मनुष्य अपनी बुद्धि तथा भाषा के बल पर सबसे अलग है। मानव जाति की व्युत्पत्ति से आज तक भाषा का विकास निरंतर होता आ रहा है। प्रारंभ में विभिन्न ध्वनि-चिह्नों, संकेतों तथा आंगिक चेष्ठाओं के द्वारा एक मनुष्य अपने विचार, भाव-भावनाएँ दूसरे मनुष्य तक पहुँचाता था। इस प्रकार मनुष्य-मनुष्य के बीच विचारों का आदान-प्रदान किया जाता था।

समय बीतता गया। काल परिवर्तन के अनुसार मानव-जाति तथा उसकी भाषा में काफी परिवर्तन आता गया। अपनी बुद्धि के सहारे मनुष्य ने भाषा का विकास किया। भाषा के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान करने में काफी सहायता मिलती गई और इसी भाषा की संप्रेषणीयता के कारण संपूर्ण मानव-जाति एक डोर में बंध गई। भाषा की संप्रेषणीयता के बारे में डॉ. अर्जुन चव्हाण का कहना है कि "वस्तुतः किसी भी जीवंत और जानदार भाषा की बुनियादी शर्त होती है उसकी संप्रेषणात्मकता या संप्रेषणमूलक क्षमता। जो भाषा जितनी अधिक संप्रेषणीय होती है वह उतनी ही अधिक 'जन' भाषा के निकट आती है।"[1]

भाषा का संबंध समाज और मनुष्य दोनों से है। साहित्य में भाषा को अनन्य साधारण महत्त्व होता है। साहित्यकार की सफलता तो पूर्णतः भाषा पर ही आश्रित है। भाषा के संदर्भ में प्रभा वर्मा का कहना है कि "भाषा के माध्यम से ही एक संदर्भ अथवा विषय निश्चित शिल्प के द्वारा किसी रचना में प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यासकार भाषा के प्रयोग से ही सामाजिक यथार्थ को उभारता है। सामाजिक परिवर्तनों के साथ-साथ भाषा भी अपनी

---

1. डॉ. अर्जुन चव्हाण - मीडियाकालीन हिंदी : स्वरूप एवं संभावनाएँ, पृष्ठ - 29

संरचना में अनेक परिवर्तनों को समाहित करती है।''[1] उक्त कथन से भाषा-शिल्प का महत्त्व स्पष्ट होता है।

साहित्य में वस्तु, चरित्र एवं परिवेश के निर्माण में भाषा का विशिष्ठ योग रहता है। जिस प्रकार कविता में भावनुरूप शब्दों का महत्त्व होता है उसी तरह उपन्यास में वस्तु के अनुरूप शब्दों का प्रयोग होना चाहिए। कविता में छंद, नाद और लय के आग्रह के कारण कवि अनेक बार बंध जाता है। परंतु उपन्यासकार को उन्मुक्त प्रयोग की पूरी-की-पूरी सुविधा रहती है। भाषिक स्वतंत्रता का यह पक्ष साठोत्तरी उपन्यासों में दिखाई देता है।

चरित्रोद्घाटन में व्यक्ति के चरित्र का निर्माण, संस्कार, शिक्षा एवं परिवेश से होता है और उसी के अनुरूप भाषा भी होती है। अतः भाषा कई बार 'एक्स-रे-रिपोर्ट' का काम करती है। कोई चाहे कैसा भी मुखौटा धारण करें, फिर भी उसकी भाषा कहीं-न-कहीं उसकी वास्तविकता को उद्घाटित कर देती है।

व्यक्ति या चरित्र की भाँति परिवेश के अनुसार भी अलग-अलग भाषा प्रयुक्त होती है। आंचलिक, नागरीय, महानगरीय आदि परिवेश की भाषाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। ग्रामीण परिवेश की भाषा में भी क्षेत्रीयता के आधार पर अंतर दिखाई देता है। नगरीय परिवेश की भाषा में भी उच्च वर्ग, मध्य वर्ग एवं निम्न वर्ग के परिवेश की भाषा इस प्रकार भिन्नता होती है। आँचलिक भाषा में लोकभाषा, लोकगीत, कहावतें, मुहावरें, विभिन्न भक्त कवियों की सूक्तियाँ भी उपलब्ध होती हैं।

उपरोक्त दृष्टि से हम देखते हैं तब हमें पता चलता है कि साहित्य में भाषा-शिल्प को असाधारण महत्त्व है। भाषा-शिल्प के अंतर्गत विभिन्न शैलियों, शब्द प्रयोग, कहावतें, मुहावरें, चिह्न, लोकक्तियाँ आदि का प्रयोग किया जाता है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में भाषा-शिल्प के अंतर्गत विभिन्न शैलियाँ, कहावतें, मुहावरें, लोकक्तियाँ आदि का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है। भाषा-शिल्प की दृष्टि से जगदीशचंद्र ने काफी ध्यान दिया है। भाषा-शिल्प की दृष्टि से 'धरती धन न अपना' सफल उपन्यास कहा जाएगा।

---

1. प्रभा वर्मा - हिंदी उपन्यास : परिवर्तन की प्रक्रिया और स्वरूप, पृष्ठ - 328

5.1 भाषा-शिल्प -

साहित्य में भाषा-शिल्प और भाषा-शैली दोनों अलग-अलग विचारों की सफल अभिव्यक्ति के लिए उचित भाषा के साथ-साथ शैली अलग होते हुए भी अनिवार्य रूप से जूड़ी है। भाषा का प्रस्तुतीकरण ही शैली है। भाषा-शैली और भाषा-शिल्प दोनों में काफी अंतर दिखाई देता है। 'शैली' और 'शिल्प' दो अलग-अलग शब्द हैं। कुछ रचनाकार 'शैली' और 'शिल्प' दोनों एक ही मानते हैं। 'शिल्प' शब्द शैली से बहुत व्यापक है। साहित्य के क्षेत्र में शिल्प का प्रयोग साधारणतः कलात्मक सौंदर्य के लिए करते हैं। शिल्प वस्तु को अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया का वैशिष्ट्य है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिल्प का अभिप्राय ऐसी अभिव्यंजना प्रक्रिया से है, जो जीवन और सप्राण, समुच्चयपरक और संश्लेषणात्मक है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में भाषा और शिल्प दोनों में परिवर्तन आया हुआ दिखाई देता है। प्रमुखतः उपन्यास विधा में यह परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा क्रमशः घटनाप्रधान शिल्प से वर्णनात्मक शिल्प की ओर, वर्णनात्मक से नाटकीय और नाटकीय से प्रतीकात्मक शिल्प की ओर तथा विश्लेषणात्मक शिल्प की ओर बढ़ी है।

अर्थगत रूप से 'शिल्प' को अंग्रेजी शब्द 'टेकनिक' का पर्यायवाची माना है, परंतु 'टेकनिक' और 'शिल्प' दोनों अलग-अलग अर्थ प्रतीति करते हैं। 'टेकनिक' एक स्थिर धारणा है। 'टेकनिक' की सीमा विभिन्न पद्धतियाँ हैं- जबकि 'शिल्प' के अंतर्गत वे सभी उपकरण साधन आ जाते हैं जिसके द्वारा कला की अभिव्यक्ति होती है। तकनीक शिल्प का एक अंग है।

5.2 साहित्य में भाषा-शिल्प का महत्त्व -

शिल्प-विधि एक माध्यम है, जिसकी सहायता से रचनाकार अपनी रचना का कथ्य प्रस्तुत करता है। रचनाकार अपनी सुविधा के अनुसार उपन्यास के तत्त्वों को अपने तरीके से तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करता है। रचना के उद्देश्यों को स्पष्ट कर सामने लाने का कार्य शिल्प-विधि से होता है।

उपन्यास की सफलता भाषा-शिल्प पर निर्भर होती है। इसीलिए शिल्प-पक्ष को विशेष महत्त्व मिला है। शिल्प के बारे में प्रभा वर्मा लिखती हैं- "शिल्प के माध्यम से ही हम प्रबंध काव्य, खंड काव्य, मुक्त, गीत, आख्यान, नाटक, एकांकी, कहानी और उपन्यास के अंतर को समझ पाते हैं।"[1] इससे शिल्प-विधि का महत्त्व समझ में आता है।

उपन्यास की दृष्टि से जब हम शिल्प विधि का विचार करते हैं तो दो भागों में शिल्प-विधि का अध्ययन करना पढ़ता है। एक है कथानक संबंधी शिल्प तथा दूसरा है चरित्र-चित्रण संबंधी शिल्प ।

कथानक संबंधी शिल्प का जब विचार किया जाता है तब उस नें कथानक की विभिन्न शैलियों का समावेश होता है। साहित्य की अन्य विधाओं में भी कथानक पद्धति को अपनाने से उपन्यास की कथानक शैली में भी विभिन्नता आ गई है। साहित्य में अभिव्यक्ति के लिए अनेक शैलियाँ प्रचलित हैं। जिसमें- वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, डायरी शैली, पत्रात्मक शैली, चेतना प्रवाह शैली, वैचारीक शैली और व्यंग्यात्मक शैली आदि विभिन्न शैलियाँ कथानक संबंधी शिल्प प्रक्रिया में आती हैं।

चरित्र-चित्रण संबंधी शिल्प के बारे में कहा जाता है कि पात्र, वातावरण, रूप-शैली और सच्चे उपन्यासकार की वर्णन शक्ति आदि को पढ़ने के हम इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि इससे बचने के लिए प्रयत्न आवश्यक हो जाते हैं। इसी कारण चरित्र-चित्रण शिल्प संबंधी नए-नए प्रयोग किए जा रहे हैं।

युगानुरूप विभिन्न विषयों पर उपन्यास लेखन हो रहा है। आंचलिक उपन्यासों की रचना प्रक्रिया से वातावरण शिल्प में भी परिवर्तन आया है। आधुनिक रचनाकार चरित्र-चित्रण को विचार-संप्रेषण का साधन मानता है। इसीलिए आज के उपन्यासों में निराशा, हताश, कुंठित और भ्रमित चरित्र उभर रहे हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल के हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी के चरित्र-चित्रण शिल्प में पर्याप्त अंतर दिखाई देता है। एक

---

1. प्रभा वर्मा - हिंदी उपन्यास : सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया और स्वरूप, पृष्ठ - 329

ओर लेखकों ने नारी के परंपरागत स्वरूप को सराहा है तो दूसरी ओर उसे अत्याधिक आधुनिका के रूप में भी चित्रित किया गया है।

आधुनिक उपन्यासकारों की दृष्टि परिवेश पर अत्याधिक केंद्रित हुई है। पात्र की अपेक्षा परिवेश ही उपन्यास का नायक बनने लगा है। मानव जीवन की जटिलताओं एवं संघर्षों को उतनी ही गहराई से चित्रण किया जा रहा है। परिवेश की भयावहता चरित्रों पर हावी हो रही है। वातावरण चित्रण को कथ्य में स्थान देने से यद्यपि उपन्यास के कलात्मक शिल्प को धक्का लगा है, किंतु फिर भी इससे एक नए शिल्प को भी स्थान मिला है। नए भावबोध को वहन करनेवाली भाषा एवं शिल्प संबंधी निरंतर प्रयोग किए जा रहे हैं।

5.3 'धरती धनन अपना' उपन्यास का भाषा-शिल्प -

नए-नए भाषा-शिल्प का प्रयोग करके रचनाकार अपनी रचना की ओर पाठकों को आकर्षित करने का प्रयास करता है। आधुनिक काल के लेखकों ने समाज में प्रचलित भाषा को अपने साहित्य में स्थान देकर समाज का इतिहास और संस्कृति को उजागर करने का प्रयास किया है। वर्तमान साहित्य की भाषा के संदर्भ में डॉ. अर्जुन चव्हाण का मानना है कि "आज वह भाषा सबसे समृद्ध भाषा नहीं कि जिसका इतिहास, साहित्य और संस्कृति समृद्ध है बल्कि वह भाषा सबसे समृद्ध है कि जो वर्तमान परिवेश में अधिक अनुकूल और उपयोग में लाई जाती है।"[1]

शुरूवाती दौर में उपन्यास के भाषा-शिल्प तथा भाषा-शैली अलग-अलग थी, परंतु आधुनिक काल के उपन्यास समाज के वास्तविक यथार्थ से जूड़ने के कारण पाठकों को आकर्षित कर रहे हैं।

प्रगतीशील उपन्यासकार जगदीशचंद्र ने 'धरती धन न अपना' उपन्यास की कथावस्तु में ग्रामीण परिवेश को प्राथमिकता दी है। अतः आलोच्य उपन्यास का प्रारंभ ही इस प्रकार हुआ है- "काली जब गाँव के निकट पहुँचा तो पौ फट चुकी थी। वह एक रूंड-मुंड वृक्ष के पास खड़ा होकर गाँव की ओर देखने लगा जो सुबह के मलगजे अंधेरे में बहुत बड़ी

---

1. डॉ. अर्जुन चव्हाण - मीडियाकालीन हिंदी : स्वरूप एवं संभावनाएँ, पृष्ठ - 37

गढ़री की तरह नजर आ रहा था।"[1] यहाँ गाँव के लिए बड़ी गठरी का उपमान वस्तु-सापेक्षता की दृष्टि से सटीक लगता है।

'धरती धन न अपना' उपन्यास का कथाक्षेत्र पंजाब प्रांत रहा है। संपूर्ण उपन्यास में पंजाबी ग्रामीण परिवेश दिखाई देता है। निम्नवर्गीय दलित समाज के सामाजिक यथार्थ को बखुबी चित्रित किया है। प्रस्तुत उपन्यास में पंजाबी भाषा के शब्द कहावतें, मुहावरें, लोकक्तियों का प्रयोग हुआ है। दलित समाज में बोली जानेवाली भाषा, गंदी-गंदी गालियाँ आदि का चित्रण यथावचत किया गया है। ग्रामीण परिवेश की भाषा का अंकन करने में जगदीशचंद्र को काफी सफलता मिली है।

आलोच्य उपन्यास में दलितों की बोली भाषा का यथार्थ चित्रण ज्यों-का-त्यों हुआ है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित भाषा में विभिन्न शब्द प्रयोग, कहावतें, मुहावरें, लोकक्तियाँ तथा भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है वह निम्न प्रकार है-

5.4 शब्द-प्रयोग -

साहित्य या किसी रचना में शब्द-प्रयोग सबसे महत्त्वपूर्ण होता है। रचना या वाक्य में शब्दों का उचित, अनुचित प्रयोग पर रचनाकार का ध्यान होना चाहिए। उचित तथा सार्थक शब्दों के चयन से ही कोई एक कृति उत्कृष्ठ हो सकती है। उपन्यास या किसी भी कृति की यशस्वीता उचित शब्द-प्रयोग पर निर्भर होती है। इसलिए साहित्य में शब्द-प्रयोग का महत्त्व असाधारण है।

शब्द भाषा का एक अवयव है। शब्द भाषा की सार्थक लघुत्तम इकाई है। व्याकरणिक दृष्टि से शब्द की परिभाषा डॉ. नामदेव उतकर ने इस प्रकार की है- "एक या अधिक वर्णों से बनी स्वतंत्र सार्थक ध्वनि अथवा ध्वनिसमूह ही शब्द है।"[2] भाषा भावों की अनुगामिनी होती है, इसीलिए भावों के अनुकूल ही शब्दों का प्रयोग करना होता है। जिस भाषा का शब्द समूह जितना अत्याधिक होगा वह उतनी समृद्ध होगी। शब्द पर भाषा का भवन खड़ा रहता है। अर्थात् भाषा का मूलाधार शब्द है। कोई भी रचनाकार को चाहिए कि

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 9
2. डॉ. नामदेव उतकर - व्यावहारिक हिंदी व्याकरण, पृष्ठ - 38

वह अपनी रचना में वस्तुतः चरित्र एवं परिवेश के अनुरूप शब्दों का चयन करें, अन्यथा रचना की स्वाभाविकता अतएव यथार्थता को व्याघात पहुँचा सकता है। इसके लिए रचनाकार को शब्दों पर अधिकार होना चाहिए।

शब्द भाषा में ही नहीं बल्कि शैली में भी महत्त्वपूर्ण होते हैं। शब्दों की कलात्मक योजना को ही शैली कहा जाता है। भाषा की व्युत्पत्ति का जब हम विचार करें तो हम भाषा में ही शब्द की उपलब्धि का अनुमान लगा सकते हैं। अच्छे शब्द-प्रयोग से रचनाकार साहित्य को उच्चकोटि तक ले जाता है। जिस प्रकार मूर्तिकार का संबंध मिट्टी से है, लेखक का वही संबंध सामग्री के रूप में शब्दों से है। साहित्य में शब्दों की प्रतिष्ठा तभी होती है, जब उनके द्‌वारा अभीष्ठ भाव या विचार की ठीक-ठाक अभिव्यक्ति हो सके। इसके लिए रचनाकार को शब्दों का पूर्ण ज्ञान एवं उचित प्रयोग का ज्ञान होना आवश्यक है। शब्द चुनाव ही लेखक की प्रकृति और उसकी योग्यता का संकेत है। साहित्य में किसी विचार या भाव को ठीक से प्रस्तुत करने के लिए केवल एक शब्द ही सक्षम होता है, उसके स्थान पर कोई अन्य शब्द या पद पर्यायवाची नहीं बन सकता। इस स्थिति में शब्द-चयन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है।

सार्थक, सामयिक, शुद्‌ध व्याकरण सम्मत, श्रोता या पाठक के उपयुक्त शब्दों का चुनाव रचनाकार से बहुमुखी प्रतिभा एवं ज्ञान की अपेक्षा रखता है। अतः शब्दों का प्रयोग इस प्रकार किया जाए जिसे लेखक एवं पाठक दोनों की अनुभूति, दर्शन, विचार, चिंतन, विवेक आदि के यथा-तथ्य एवं अनुकूल हो।

क्षेत्रीय प्रभाव का भी एक विशिष्ठ महत्त्व होता है। उचित शब्द-प्रयोग करते समय कथावस्तु के परिवेश का ध्यान रखना आवश्यक होता है। आंचलिक या नगरीय परिवेश के अनुसार ही आंचलिक तथा नगरीय शब्दों का तथा भाषा का प्रयोग करना होता है। सामान्यतः कोई माँ अपने बेटे को 'पुत्र' या 'पुत्तर' से संबांधित करे तो किंचित अस्वाभाविक प्रतीत होता है, बल्कि पंजाबी में यह सामान्य प्रयोग के रूप में माना जाता है। अतः 'धरती धन न अपना' उपन्यास में प्रतापी चाची अपने भतीजे काली को 'पुत्तर' से संबोधित करती है, तो वह शब्द प्रयोग स्वाभाविक लगता है। क्योंकि 'धरती धन न अपना' उपन्यास की

कथावस्तु का परिवेश पंजाब प्रांत रहा है। उसी प्रकार 'रंडी' या 'रांड' यह शब्द कुछ क्षेत्र में गाली के रूप में प्रचलित हैं, परंतु पंजाब में विधवा के लिए सामान्यतया इस शब्द का प्रयोग होता है।

'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने विभिन्न भाषाओं के शब्द, कहावतें, मुहावरें, लोकक्ति आदि का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है। आंचलिक उपन्यासों में देहाती और क्षेत्रीय शब्द-प्रयोग तथा अंग्रेजी के कुछ अपभ्रंश उपलब्ध होते हैं। उर्दू और अरबी-फारसी के शब्दों से हमारा पुराना नाता है। उर्दू की भाँति अंग्रेजी भी हमारी भाषा में रच-पच गई है। देहाती और अनपढ़ लोग भी टूटी-फूटी अंग्रेजी शब्दों का इस्तेमाल करते हुए नजर आते हैं। प्रायः सभी आधुनिक महानगरीय परिवेश के उपन्यासों में अंग्रेजी शब्द ही नहीं, प्रत्युत कहीं-कहीं पूरे-के-पूरे वाक्य अंग्रेजी के उपलब्ध होते हैं। भाषा की प्रेषणीयता के लिए यह आवश्यक भी है। अध्ययनार्थ उपन्यास में निम्न शब्द-प्रयोग हुआ है-

5.4.1 लोकभाषा के शब्द -

लेखक अपनी रचना में समाज का चित्रण करता है। सामाजिक परिवेश के साथ-साथ वहाँ बोली जानेवाली लोक-भाषा के शब्दों का प्रयोग यथावत किया जाता है। लोकभाषा का प्रयोग के कारण लोगों की सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति का ज्ञान होता है।

'धरती धन न अपना' उपन्यास ग्रामांचलिक है। इसमें ग्रामीण जीवन में बोली जानेवाली लोकभाषा के शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में मिलता है। आलोच्य-उपन्यास का कथाक्षेत्र पंजाब भूमि रहने के कारण पंजाबी भाषा के शब्द भी कहीं-कहीं प्रयुक्त हुए हैं। विवेच्य उपन्यास में लोकभाषा के शब्द प्रयुक्त हुए हैं। वे इस प्रकार हैं - 'चौधर'[1], 'शहरिया'[2], 'रकबा'[3], 'सागूदाना'[4], 'हनेर'[5], शशोपंज'[6] (दुविधा), 'घेर'[7] (दर्द),

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 32
2. वही, पृष्ठ - 48
3. वही, पृष्ठ - 88
4. वही, पृष्ठ - 164
5. वही, पृष्ठ - 275
6. वही, पृष्ठ - 142
7. वही, पृष्ठ - 203

'सोम'[1] (ईंट का प्रकार), 'धेवरानी'[2], 'दवन्नी'[3], 'समें'[4] (समय), 'हडबौंग'[5] आदि कई लोकभाषा के शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

5.4.2 तत्सम शब्द -

सभी भाषाओं का निर्माण संस्कृत भाषा से माना जाता है। अतः संस्कृत के शब्द विभिन्न भाषाओं में ज्यों-की-त्यों प्रयोग किए हुए दिखाई देते हैं। ऐसे संस्कृत शब्द 'तत्सम शब्द' कहलाते हैं। ''तत्सम का शाब्दिक अर्थ है- उसके समान। जो शब्द संस्कृत के समान होकर बिना परिवर्तन के ज्यों-की-त्यों रूप में हिंदी में आए हैं।''[6] ऐसे शब्द 'तत्सम शब्द कहलाते हैं।

'धरती धन न अपना' उपन्यास में संस्कृत से आए शब्द बिना परिवर्तन के प्रयुक्त हुए हैं। वे इस प्रकार हैं- 'समय'[7], 'पिता'[8], 'नेता'[9], 'परमात्मा'[10] आदि।

5.4.3 तद्‌भव शब्द -

'तद्‌भव शब्द' संस्कृत शब्दों के परिवर्तनीय रूप होते हैं। ''तद्‌भव शब्द वे होते हैं, जिन्हें हम विकृत कह सकते हैं। जो संस्कृत के शुद्ध रूप से निकले होते हैं। संस्कृत के जो शब्द पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से होते हुए हिंदी में आए हैं। जिनका आते-आते मूल रूप बदल गया है, वे 'तद्‌भव शब्द' कहलाए जाते हैं।''[11] हिंदी भाषा में ऐसे अनेक शब्द मिलते हैं।

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 59
2. वही, पृष्ठ - 98
3. वही, पृष्ठ - 100
4. वही, पृष्ठ - 21
5. वही, पृष्ठ - 20
6. डॉ. नामदेव उतकर - व्यावहारिक हिंदी व्याकरण, पृष्ठ - 40
7. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 98
8. वही, पृष्ठ - 167
9. वही, पृष्ठ - 243
10. वही, पृष्ठ - 283
11. डॉ. नामदेव उतकर - व्यावहारिक हिंदी व्याकरण, पृष्ठ - 41

'धरती धन न अपना' उपन्यास में जगदीशचंद्र ने विभिन्न तद्‌भव शब्दों का प्रयोग किया हुआ है। आलोच्य उपन्यास में प्रयुक्त 'तद्‌भव शब्द' इस प्रकार हैं- 'आँसू'[1], 'गोबर'[2], 'चौगान'[3], 'ब्याह'[4], 'घी'[5], 'दूध'[6], 'कुआँ'[7] आदि कई तद्‌भव शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

5.4.4 देशज शब्द -

किसी रचना या कृति का कथाक्षेत्र जिस परिवेश या क्षेत्र से संबंधित है उस क्षेत्र, परिवेश की भाषा का प्रयोग रचना में होता है। इससे वह रचना उस क्षेत्र का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है। साहित्य में क्षेत्रीय भाषा को स्थान देकर साहित्यकार पूरे क्षेत्र को पाठक के सामने उपस्थित करता है।

देशज शब्दों को 'देश्य' या 'देशी' शब्द भी कहा जाता है। ये शब्द तत्सम एवं तद्‌भव शब्द नहीं होते। बोलियों, उपभाषाओं तथा अन्य भाषाओं से ये शब्द लिए जाते हैं। सामान्यतः देशज शब्द भारतीय भाषाओं से आगत होते हैं।

'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने अनेक देशज शब्दों का प्रयोग किया है। पंजाबी भाषा के भी विभिन्न शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है। विवेच्य उपन्यास में देशज शब्द प्रयोग हुए हैं। वे इस प्रकार हैं- 'कबड्डी'[8], 'जूता'[9], 'कटोरी'[10],

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 12
2. वही, पृष्ठ - 15
3. वही, पृष्ठ - 15
4. वही, पृष्ठ - 18
5. वही, पृष्ठ - 162
6. वही, पृष्ठ - 165
7. वही, पृष्ठ - 214
8. वही, पृष्ठ - 114
9. वही, पृष्ठ - 20
10. वही, पृष्ठ - 30

'घूँट'[1], 'झगड़ा'[2], 'पेड़'[3], 'टीस'[4] आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। इसके साथ-साथ पंजाबी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। 'धरती धन ने अपना' उपन्यास में प्रयुक्त पंजाबी शब्द इस प्रकार हैं - ' तंद'[5], 'डंग'[6], 'सुड्डा'[7], 'सीख'[8], 'पुत्तर'[9], 'डाँग'[10] आदि।

5.4.5 विदेशी शब्द -

भारत पर विदेशी राजसत्ताएँ राज करती रहीं। जिससे विदेशी भाषा, संस्कृति, रहन-सहन आदि का प्रभाव भारतीय रहन-सहन, भाषा तथा संस्कृति पर हुआ। मुघल, अंग्रेज, पोर्तुगीज, फ्रेंच आदि के युद्धकाल में उनकी संस्कृति तथा भाषा का भारतीय भाषाओं से आदान-प्रदान हुआ। इसी वजह से भारतीय साहित्य में भी विदेशी शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है। विदेशी शब्दों के बारे में डॉ. नामदेव उतकर लिखते हैं- ''भारतीय भाषाओं में विदेशियों के संपर्क से या उनके प्रभुत्व से असंख्य शब्द अपना लिए गए हैं, वे शब्द विदेशज कहते हैं।''[11]

'धरती धनन अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने अंग्रेजी, उर्दू, पोर्तुगाली, अफगानी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है। विवेच्य उपन्यास का कथाक्षेत्र देहाती होते हुए भी वहाँ उपर्युक्त भाषाओं के शब्दों का प्रयोग मिलता है। आज अगर हम देहातों में देखते हैं तो देहाती भाषा में विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 47
2. वही, पृष्ठ - 238
3. वही, पृष्ठ - 242
4. वही, पृष्ठ - 261
5. वही, पृष्ठ - 90
6. वही, पृष्ठ - 101
7. वही, पृष्ठ - 134
8. वही, पृष्ठ - 141
9. वही, पृष्ठ - 282
10. वही, पृष्ठ - 200
11. डॉ. नामदेव उतकर - व्यावहारिक हिंदी व्याकरण, पृष्ठ - 45

हुआ दिखाई देता है। भाषा में सजीवता लाने के लिए विभिन्न भाषा के शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है।

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित अन्य भाषाओं के शब्द इस प्रकार हैं-

1. **अंग्रेजी शब्द-** 'क्लास स्ट्रगल'[1], 'एक्सप्लाइट'[2], 'अनसायंटिफिक थ्योरी'[3], 'रिएक्शनरी'[4], 'स्लेवरी'[5], 'लीडरशीप'[6], 'मास मुवमेण्ट'[7] आदि अंग्रेज़ी शब्द प्रयुक्त हुए हैं।
2. **फारसी शब्द -** 'दरवाजा'[8], 'जबान'[9], 'बीमार'[10], 'नाखून'[11], 'जहर'[12] आदि।
3. **अफगानी शब्द -** 'अचार'[13]।
4. **पुर्तगाली शब्द -** 'अलमारी'[14]।
5. **अरबी शब्द -** 'धर्म'[15], 'मुहल्ला'[16], 'मौत'[17], 'शहर'[18], 'बुनियाद'[19], 'दीवार'[20],

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 142
2. वही, पृष्ठ - 144
3. वही, पृष्ठ - 110
4. वही, पृष्ठ - 247
5. वही, पृष्ठ - 247
6. वही, पृष्ठ - 239
7. वही, पृष्ठ - 253
8. वही, पृष्ठ - 11
9. वही, पृष्ठ - 24
10. वही, पृष्ठ - 44
11. वही, पृष्ठ - 98
12. वही, पृष्ठ - 283
13. वही, पृष्ठ - 93
14. वही, पृष्ठ - 36
15. वही, पृष्ठ - 152
16. वही, पृष्ठ - 81
17. वही, पृष्ठ - 283
18. वही, पृष्ठ - 16
19. वही, पृष्ठ - 87
20. वही, पृष्ठ - 12

'बेकार'[1] आदि।

6. **तुर्की शब्द -** 'काबू'[2], 'लाश'[3]।

7. **उर्दू शब्द -** 'याद फरामोश'[4]

आदि विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग विवेच्य उपन्यास में दिखाई देता है। लेखक जगदीशचंद्र ने आवश्यकतानुरूप विदेशी शब्दों का प्रयोग 'धरती धन न अपना' उपन्यास में किया है।

5.4.6 अन्य शब्द -

भाषा को रोचक एवं प्रवाहमयी बनाने के लिए रचनाकार विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग करता है। इसके साथ-साथ कुछ ऐसे शब्द प्रयुक्त होते हैं, जिसमें- ध्वन्यार्थक, निरर्थक, पुनरूक्ति और संयुक्त शब्द आते हैं। आलोच्य उपन्यास में ऐसे अन्य शब्द प्रचुर मात्रा में प्रयुक्त हुए दिखाई देते हैं।

5.4.6.1 ध्वन्यार्थक शब्द -

'धरती धन न अपना' उपन्यास में अनेक ध्वन्यार्थक शब्द प्रयुक्त हुए हैं। वातावरण तथा परिस्थिति का यथावत चित्रण करने के लिए रचनाकार ध्वन्यार्थक शब्दों का प्रयोग करता है। ध्वन्यात्मक शब्दों के बारे में कुसुम शर्मा की मान्यता है कि "वातावरण में सजीवता तथा चित्रात्मकता लाने के लिए कई ध्वनियों को शब्दों के माध्यम से उपन्यास में उतारने का प्रयास किया जाता है। लहजा या टोन उभारने के लिए ध्वन्यात्मकता का प्रयोग किया जाता है।"[5] उक्त कथन से ध्वन्यार्थक शब्दों का महत्त्व स्पष्ट होता है।

जगदीशचंद्र के उपन्यास 'धरती धन अपना' में ध्वन्यार्थ शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 227
2. वही, पृष्ठ - 45
3. वही, पृष्ठ - 284
4. वही, पृष्ठ - 284
5. कुसुम शर्मा - साठोत्तर हिंदी उपन्यास : विविध प्रयोग, पृष्ठ - 184

वे इस प्रकार हैं- 'तुत-तुत'[1], 'टक-टक'[2], 'चटाख-चटाख'[3], 'चराँ-चराँ'[4] आदि ध्वन्यार्थक शब्दों का प्रयोग हुआ है।

5.4.6.2 निरर्थक शब्द -

वाक्य में ऐसे अनेक शब्द होते हैं, जो निरर्थक समझे जाते हैं। भाषा में सहज स्वाभाविक प्रवाहता लाने के लिए निरर्थक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित निरर्थक शब्द इस प्रकार हैं- 'पाल-पोस'[5], 'सुख-सांद'[6], 'खुसर-फुसर'[7], 'अनाप-सनाप'[8], 'अच्छी-भली'[9], 'दम-खम'[10] आदि निरर्थक शब्द प्रयुक्त हुए दिखाई देते हैं।

5.4.6.3 पुनरूक्ति शब्द -

कुछ ऐसे शब्द होते हैं जिनकी बार-बार पुनरावृत्ति होती है। ऐसे शब्दों को पुनरूक्ति या द्विरूक्ति शब्द कहते हैं। वाक्य में एक ही शब्द एक साथ दो बार आते हैं। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में भी कुछ ऐसे ही पुनरूक्ति शब्द प्रयुक्त हुए हैं। वे इस प्रकार हैं-'थोड़े-थोड़े'[11], 'बुझी-बुझी'[12], 'कदम-कदम'[13], 'बार-बार'[14], 'अहिस्ता-अहिस्ता'[15],

---

1. जगदीश चंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 9
2. वही, पृष्ठ - 9
3. वही, पृष्ठ - 19
4. वही, पृष्ठ - 67
5. वही, पृष्ठ - 13
6. वही, पृष्ठ - 25
7. वही, पृष्ठ - 26
8. वही, पृष्ठ - 260
9. वही, पृष्ठ - 281
10. वही, पृष्ठ - 242
11. वही, पृष्ठ - 40
12. वही, पृष्ठ - 11
13. वही, पृष्ठ - 10
14. वही, पृष्ठ - 199
15. वही, पृष्ठ -158

'सोच-सोच'[1] आदि।

5.4.6.4 संयुक्त शब्द -

'धरती धन न अपना' उपन्यास में ध्वन्यार्थक, निरर्थक, पुनरूक्ति शब्दों के साथ-साथ संयुक्त शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। विवेच्च्य उपन्यास में प्रयुक्त संयुक्त शब्द इस प्रकार हैं - 'दिन-रात'[2], 'दीया-बत्ती'[3], 'इधर-उधर'[4], 'नफा-नुकसान'[5], 'दवा-दारू'[6], 'सुख-दुख'[7] आदि संयुक्त शब्द प्रयुक्त हुए दिखाई देते हैं।

5.5 मुहावरें -

भाषा का सौंदर्य बढ़ाने के लिए लेखक अपनी रचना में कहीं-कहीं पर विभिन्न मुहावरें, कहावतें, लोकक्तियाँ आदि का प्रयोग करता है। जिससे थोड़े ही शब्दों में जादा से जादा अभिव्यक्ति की जा सकती है।

मुहावरों के प्रयोग से किसी एक परिस्थिति की तुलना या बराबरी की जाती है। मुहावरों के द्वारा वास्तविक सत्य की प्रतीति होती है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने अनेक मुहावरों के प्रयोग से दलित समाज के समाज जीवन का यथार्थ प्रस्तुत किया है। विवेच्य उपन्यास में पंजाबी तथा हिंदी दोनों भाषाओं के मुहावरें प्रयुक्त हुए हैं। वे इस प्रकार हैं-

पंजाबी भाषा के मुहावरें -

'दादा-दाढ़ी एक करना'[8], 'बकरे बुलाना'[9]।

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 262
2. वही, पृष्ठ - 12
3. वही, पृष्ठ - 21
4. वही, पृष्ठ - 59
5. वही, पृष्ठ - 85
6. वही, पृष्ठ - 175
7. वही, पृष्ठ - 121
8. वही, पृष्ठ - 127
9. वही, पृष्ठ - 130

हिंदी भाषा के मुहावरें -

'शक्की होना'[1], 'आग-बबूला होना'[2], 'कटी उंगली में नमक छिड़कना'[3], 'साँप सूँघना'[4] आदि पंजाबी और हिंदी भाषा के मुहावरों का यथावत प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है।

5.6 कहावतें -

कम-से-कम शब्दों में गंभीर तथा विस्तृत अर्थ को प्रतिपादित करने का कार्य मुहावरें, कहावतें करते हैं। सभी भाषाओं में प्रचुर मात्रा में कहावतें होती हैं। ज्यादातर बोलीभाषा में मुहावरें एवं कहावतों का ही प्रयोग लोग करते दिखाई देते हैं।

'धरती धन न अपना' उपन्यास में जगदीशचंद्र ने अनेक कहावतों का प्रयोग किया है। विवेच्य उपन्यास में जो कहावतें प्रयुक्त हुए हैं वह पंजाबी कहावतों का हिंदी भाषा में रूपांतर करके लेखक जगदीशचंद्र ने प्रयुक्त किए हैं। वे इस प्रकार हैं-

"जोरावर का सात बीस का सौ।"[5]

"गोरा कमीन और काला ब्राह्मण दोनों हरामी होते हैं।"[6]

उपरोक्त पंजाबी भाषा के कहावतों का हिंदी भाषा में रूपांतर किया हुआ है।

5.7 भाषा-शैली -

उपन्यास में भाषा को अनन्य साधारण महत्त्व है। भाषा के माध्यम से रचनाकार परिवेश तथा अपनी अनुभूति को लिपिबद्ध करता है। उपन्यास में भाषा की महत्ता के बारे में डॉ. दंगल झाल्टे लिखते हैं- "उपन्यास में भाषा की एक स्वतंत्र सत्ता होकर उसकी स्थिति निश्चित रूप से मध्यवर्ती हो गई है। अतः भाषा को उपन्यास के एक मूल्यवान

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 60
2. वही, पृष्ठ - 78
3. वही, पृष्ठ - 122
4. वही, पृष्ठ - 64
5. वही, पृष्ठ - 73
6. वही, पृष्ठ - 92

सर्जक तत्व के रूप में परखकर उसके आधार पर उपन्यास का मूल्यांकन करना नई समीक्षा का दायित्व है।"[1] उक्त कथन से रचना में भाषा का स्थान मुख्य होता है यह स्पष्ट होता है।

साहित्य में भाषा के साथ-साथ शैली को भी महत्त्व प्राप्त हुआ है। शैली को हम पद्धति भी कह सकते हैं। जिस पद्धति या रीति से भाषा का चित्रण किया जाता है उसे भाषा-शैली कहा जा सकता है। कृति को उत्कृष्ठ बनाने के लिए भाषा-शैली अच्छी होनी चाहिए। शैली एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी विधा की उत्कृष्ठता की परख आसानी से की जा सकती है।

उपन्यास-शिल्प का तीसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष भाषा-शैली को माना जाता है। प्रत्येक व्यक्ति की बातचीत, लिखने-पढ़ने की एक अलग शैली होती है, जिससे वह जाना पहचाना जाता है। दूसरों पर अपना अलग प्रभाव छोड़ता है तथा दूसरों से विशिष्ठ लगता है आदि। इसी प्रकार प्रत्येक उपन्यासकार की भी अपनी अलग भाषा-शैली होती है, जिससे वह अपने समकालीनों में अलग से पहचाना जा सकता है। प्रत्येक रचना में लेखक के व्यक्तित्व की अमिट छाप होती है। इस प्रकार रचना पर लेखक की भाषा-शैली का प्रभाव दिखाई देता है। अतः भाषा-शैली का अर्थ, परिभाषा एवं 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित भाषा-शैली का अध्ययन इस प्रकार किया है-

5.7.1 शैली का अर्थ -

सामान्यतः विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने की पद्धति को शैली कहा जाता है। शैली को अंग्रेजी भाषा में 'स्टाईल' (Style) कहा जाता है। शैली के बारे में डॉ. गणपतिचंद्र ने लिखा है- "शैली शब्द संस्कृत के 'शील' से व्युत्पन्न है। 'शीलम्' के अनेक अर्थ हैं- यथास्वभाव, लक्षण, झुकाव, उदात्त चरित्र आदि। शैली का आंग्ल पर्याय 'स्टाइल' है जो लॅटिन भाषा के 'स्टाइलॅस' (Stylus) से व्युत्पन्न है। स्टाइलॅस का अर्थ है- लिखने की नोकदार कलम। आगे चलकर इसके समानार्थक 'स्टाइल' के अनेक अर्थ विकसित हो गए जिनमें से कुछ ये हैं- लिखने का ढंग, लिखित रचना, लेखक की

---

1. डॉ. दंगल झाल्टे - नए उपन्यासों में नए प्रयोग, पृष्ठ - 132

अभिव्यक्ति या वैशिष्ट्य, साहित्यिक रचना की रूपगत विशेषताएँ, बोलने का लहजा, रीति या प्रथा, किसी कलाकार की रचना पद्धति की विशिष्ठता।''[1] इस प्रकार डॉ. गणपतिचंद्र गुप्तजी ने शैली के बारे में अपनी मान्यताएँ बताई हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि 'शैली' यह शब्द रीति, पद्धति, प्रणाली तथा वाक्य रचना का ढंग आदि अर्थों को व्यक्त करता है। 'शैली' के व्युत्पत्ति के संदर्भ में शंकरदयाल चौऋषि का मानना है कि ''जिस समय कोई लेखक भाव-व्यंजना मात्र के उद्देश्य से ऊँचा उठता है और शब्दचयन अथवा वाक्य-विन्यास का भी समुचित ध्यान रखकर अपनी लेखनी चलाता है, उसी समय 'शैली' का अथवा 'स्टाइल' का जन्म होता है।''[2] परंतु शैली की व्युत्पत्ति का जब हम विचार करते हैं तो हमें प्राचीन भारतीय काव्यशास्त्र की ओर देखना पड़ता है। प्राचीन भारतीय काव्यशास्त्र में आचार्य वामन ने 'रीतिरात्मा काव्यस्य' कहकर 'रीति' को ही साहित्य या काव्य की आत्मा बताया है। 'रीति' यह शब्द 'शैली' शब्द के अर्थरूप में प्रयोग किया दिखाई देता है। 'रीति' शब्द का अर्थ 'पद्धति' से लिया गया। अतः शैली का अर्थ किसी सूत्र की व्याख्या पद्धति से होता है।

5.7.2 शैली की परिभाषा -

आधुनिक युग में भाषा-शैली का साहित्य में असाधारण महत्त्व है। उचित भाषा-शैली के माध्यम से रचनाकार अपनी कृति की रोचकता तथा प्रभावात्मकता बढ़ाने का प्रयास करता है। 'शैली' के संदर्भ में अनेक विद्वानों ने विभिन्न परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

1. डॉ. श्यामसुंदर दास -

डॉ. श्यामसुंदरदास शैली के बारे में कहते हैं- ''किसी कवि या लेखक की शब्द योजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों की बनावट और उनकी ध्वनि आदि का नाम शैली है।''[3]

---

1. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त - हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोष, पृष्ठ - 699
2. शंकरदयाल चौऋषि - द्विवेदी युग की हिंदी गद्यशैलियों का अध्ययन, पृष्ठ - 2
3. डॉ. श्यामसुंदर दास - साहित्यलोचन, पृष्ठ - 95

इससे यह स्पष्ट होता है कि किसी रचनाकार की शब्दयोजना, वाक्य-योजना तथा ध्वनि को ही शैली कहा जाता है।

2. डॉ. गुलाबराय -

डॉ. गुलाबराय के अनुसार- "शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते हैं, जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को समान रूप से दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।"[1]

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि, रचनाकार अपने मन की भावाभिव्यक्ति को किसी विशेष रीति या पद्धति से स्पष्ट करता है, उस रीति या पद्धति को 'शैली' कहा जाता है। किसी भी रचनाकार की शक्ति उसकी भाषा और शैली होती है, जिससे वह अपनी विशिष्ठ और अलग पहचान बनाता है और पाठकों पर अपने व्यक्तित्व का प्रभाव छोड़ता है।

5.7.3 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित भाषा-शैली -

भाषा-शैली के द्वारा लेखक अपनी अनुभूति की अभिव्यक्ति करता है। कथावस्तु में सजीवता लाने का कार्य भाषा-शैली के माध्यम से होता है। शैली रचनाकार के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है, क्योंकि शैली के अभाव में रचना की प्रस्तुति संभव नहीं है। भाषा-शैली के माध्यम से लेखक किसी भी विषय या घटना को यथार्थ रूप में प्रस्तुत कर सकता है। अतः रचनाकार अपनी रचनाओं में विभिन्न शैलियों का प्रयोग करता ही रहता है।

'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। जिनमें प्रतीकात्म शैली, वर्णनात्मक, प्रश्नोत्तर, गीतात्मक, सांकेतिक, मनोवैज्ञानिक, संवाद, पूर्वदीप्ति आदि शैलियों का प्रयोग दिखाई देता है। विवेच्य उपन्यास ग्राममित्तिय होने के कारण इसमें आंचलिक शैली का भी प्रयोग हुआ है।

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित विभिन्न शैलियाँ इस प्रकार हैं -

---

1. डॉ. गुलाबराय - सिद्धांत और अध्याय, पृष्ठ - 180

5.7.3.1 प्रतीकात्मक शैली -

इस शैली के अंतर्गत रचनाकार प्रतीकों के माध्यम से अपनी अनुभूति तथा भाव-भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। जब सादृश्य की वजह से कोई वस्तु किसी अन्य वस्तु का प्रतिपादन करती है, तो उसे प्रतीक कहा जाता है। प्रतीक के बारे में धीरेंद्र वर्मा लिखते हैं- ''किसी अन्य स्तर की समानुरूप वस्तु द्वारा किसी अन्य स्तर के विषय प्रतिनिधित्व करनेवाली वस्तु प्रतीक है।''[1]

'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने कहीं-कहीं प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है। विवेच्य उपन्यास में दासू चौकीदार दलित बस्ती में काली को ढूँढ़ता है उस वक्त निक्कू चमार काली की ओर संकेत करते हुए कहता है- ''वह सामने कबूतर की तरह आँखें बंद किए हुए पड़ा है।''[2] यहाँ काली की गहरी नींद को कबूतर के प्रतीक रूप में व्यक्त किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में अन्य एक स्थान पर बलवंता दलित युवति ज्ञानो के सौंदर्य को प्रतीकात्मक भाषा में व्यक्त करता है- ''बिलकुल जंगली-मारेनी जैसी। रंग तो पक्का है लेकिन नैन-नक्श बहुत अच्छे हैं। जब वह सिर पर टोकरा उठाकर चलती है तो उसकी कच्चे खरबूजे- जैसी छातियाँ किटोरे में पड़े पानी की तरह हलकोरे खाती हैं।''[3] उक्त कथन से ज्ञानो के सौंदर्य को प्रतीक रूप में व्यक्त किया है।

अतः हम कह सकते हैं कि लेखक जगदीशचंद्र ने 'धरती धन न अपना' उपन्यास में प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है।

5.7.3.2 वर्णनात्मक शैली -

इस शैली को व्याख्यात्मक या इतिवृत्तात्मक शैली भी कहा जाता है। रचनाकार अपनी रचना को रोचक तथा सुगठित बनाने के लिए विभिन्न घटना, परिवेश आदि का वर्णन करने के लिए उपर्युक्त शैली को अपनाता है।

---

1. धीरेंद्र वर्मा - हिंदी साहित्य कोष, भाग-1, पृष्ठ - 515
2. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 65
3. वही, पृष्ठ - 135

'धरती धन न अपना' उपन्यास में जगदीशचंद्र ने चमादड़ी का यथातथ्य वर्णन किया है। चमादड़ी में घटित विभिन्न घटनाएँ, शोर-शराबा, दलित स्त्रियों की गाली-ग्लौच आदि का वर्णन हुबहू किया है। घोड़ेवाहा गाँव की चमादड़ी का वर्णन इस प्रकार किया गया है- "गोबर की तेज बदबू ने चमादड़ी के निकट ही होने का संकेत दिया। इस स्थान पर बड़ा रास्ता काफी गहरा हो गया था क्योंकि गाँव में बरसात का सारा पानी इसी रास्ते से चो में जाता था। कुछ क्षण के बाद ही वह चमादड़ी के बाहर कुएँ पर पहुँच गया। कुएँ के गिर्द गन्दे पानी और कीचड़ की छपड़ी बनी हुई थी।"[1]

इस प्रकार वर्णनात्मक शैली का प्रयोग करके दलित समाज के वास्तविक यथार्थ को समाज के सामने खोलने का प्रयास लेखक जगदीशचंद्र ने किया है।

5.7.3.3 प्रश्नोत्तर शैली -

प्रश्नोत्तर शैली के अंतर्गत रचनाकार अपनी रचना में पात्रों के माध्यम से सवाल-जवाब के रूप में वस्तु का विन्यास करता है। या कथावस्तु को आगे बढ़ाता है।

'धरती धन न अपना' उपन्यास में प्रसंगानुरूप प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग किया गया है। उपन्यास का प्रमुख पात्र काली छह बरस शहर में रहकर फिर वापस गाँव आता है। गाँव आने पर प्रतापी चाची और काली दोनों में प्रश्नोत्तर शैली से परिवेश की गंभीरता का चित्रण करने में लेखक जगदीशचंद्र को काफी सफलता मिली है।

छह साल बाद काली के गाँव वापस लौटने पर प्रतापी चाची प्रबल भावातिरेक में काली से पूछती है-

" 'काका, क्या मैं तुम्हें कभी याद नहीं आती थी ?'

'चाची तेरी याद ही तो मुझे गाँव वापस खींच लायी है।"[2]

उक्त प्रश्नोत्तर शैली के माध्यम से ममता, वात्सल्य का चित्रण किया है।

पक्का मकान बनाने के लिए सिरकियों की आवश्यकता पड़ने पर काली गाँव के बाहर बसे बाजीगरों की बस्ती की ओर जाता है। उस वक्त चाचा रोड़ा और काली का

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 10
2. वही, पृष्ठ - 12

संवाद प्रश्नोत्तर शैली में लेखक ने चित्रित किया है-

" 'पक्का मकान बना रहे हो या....?'

'कच्चा-पक्का ही समझो।'

'कितनी छतें होगी ?'

'एक ड्योढी की, एक कोठड़ी की और आधी रसोई की।'

'कितने शहतीर डालोगे ?'

'दो ड्योढ़ी पर, दो कोठड़ी पर और एक रसोई पर।''[1]

इस प्रकार प्रश्नोत्तर शैली के प्रयोग से परिवेश की गंभीरता का दर्शन होता है। मन में उठे अंतर्द्वंद्व को अभिव्यक्त करने में उपर्युक्त शैली का प्रयोग किया जाता है।

5.7.3.4 गीतात्मक शैली -

गीतात्मक शैली के अंतर्गत विभिन्न गीतों का प्रयोग उपन्यास में किया जाता है। गीतात्मक शैली में लोकगीत, लोकनाट्य गीत तथा अन्य भाषाओं के भी लोकगीतों का प्रयोग होता है। इन गीतों के द्वारा सांस्कृतिक विरासत को चित्रित करने का प्रयास लेखक अपनी कृति के माध्यम से करता है। किसी भी देश की संस्कृति को उजागर करने का प्रयास लोकगीत तथा लोक-साहित्य करता है। साहित्य में लोकगीतों के प्रयोग के संदर्भ में डॉ. ब्रजरानी वर्मा का मत है कि "लोकगीत जन संस्कृति के वेद धृति है। जिस प्रकार वेदों द्वारा आर्य सभ्यता का ज्ञान होता है उसी प्रकार ग्राम गीतों द्वारा ग्राम-संस्कृति का ज्ञान होता है।"[2] यह सत्य है कि लोकगीत साहित्य भारतीय संस्कृति का दर्शन कराते हैं।

'धरती धन न अपना' उपन्यास में जगदीशचंद्र ने पंजाबी प्रदेश में प्रचलित विभिन्न अवसरों पर गाए जानेवाले लोकगीतों का प्रयोग किया है। छोटे बच्चे का नामकरण, मुंज तथा ब्याह, अलग-अलग मौसम को लेकर लोकगीत गाए जाते हैं। विवेच्य उपन्यास का नायक काली के ब्याह की बात चलती है तब चमादड़ी की सभी दलित स्त्रियाँ फेर धरकर ब्याह के गीत रचाती है। प्रीतो, निहाली जैसी कई औरतें लोकगीत गाती हैं-

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 91
2. आजकल (पत्रिका) - सं. प्रविण उपाध्याय - सितंबर, 1989, पृष्ठ - 28

"जिस दिहाड़े मेरा काली नीं जन्मया
सोई दिहाड़ा भागाँ भरया।"[1]

उक्त लोकगीत के अनुसार 'जिस दिन मेरे काली ने जन्म लिया था वह दिन हमारे लिए शुभ था।' इस अर्थ की प्रतीति होती है।

सावन मास में गाए जानेवाले गीतों का भी चित्रण हुआ है। सावन मास में लोगों के घरों में त्यौहार जैसा माहौल रहता है। सावन में खाने के लिए खीर बनाई जाती है। इसी को लेकर दलित मुहल्ले में स्त्रियाँ गाती हैं-

"सावन खीर ना खादिया
क्यों जन्मया अपराधिया
घर न होवे अपने
ते कित्थों खावाँ पापने।"[2]

अर्थात् 'सावन में खीर नहीं खायी तो अपराधी, तुने जन्म ही क्यों लिया। अपने घर में खीर नहीं हो तो पापी-बता कहाँ से खाऊँ।' इस प्रकार के विभिन्न लोकगीतों के प्रयोग से उपन्यास की आंचलिकता बरकरार रहती है। अंचल की संस्कृति का चित्रण लोकगीतों के माध्यम से होता है।

5.7.3.5 सांकेतिक शैली -

रचनाकार कथा में प्रवाहता लाने के लिए सांकेतिक शैली का प्रयोग करता है। सांकेतिक शैली में संकेतों के माध्यम से इच्छित बात को या विचार को पाठकों तक पहुँचाया जा सकता है। इसके लिए रचना में सिर्फ संकेत दिए जाते हैं। इस बारे में डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र लिखते हैं- "जिसमें विवरण का अनावश्यक विस्तार नहीं रहता और उपन्यासकार एक ऐसा चित्र प्रस्तुत करते हैं जो सांकेतिक होता है।"[3] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि संकेतों के

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 19
2. वही, पृष्ठ - 211
3. डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र - अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, पृष्ठ - 267

प्रयोग से थोड़े ही में बहुत कुछ कहा जा सकता है। इसीलिए सांकेतिक शैली का प्रयोग रचनाकार अपनी कृति में करता है।

'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने सांकेतिक शैली का प्रयोग घटना के अनुसार किया है। उपन्यास में हरदेव चौधरी द्वारा दलित युवति लक्षो पर किए हुए बलात्कार को सांकेतिक शैली में चित्रित किया गया है। "कपास की छड़ियाँ कुछ देर तक उनके बोझ तले कड़कड़ाती रहीं। फिर थोड़ी देर के बाद हरदेव कोठड़ी से निकलकर हवेली से बाहर चला गया।"[1] इन पंक्तियों में दलित युवति लक्षो पर हुए बलात्कार की ओर संकेत होता है।

इस प्रकार के विभिन्न संकेतों के माध्यम से लेखक जगदीशचंद्र ने पाठकों पर उपन्यास का प्रभाव छोड़ा है। अंगिक संकेतों के माध्यम से भी इच्छित विचारों, भाव-भावनाओं का संप्रेषण किया जाता है। अतः उपन्यास मे सांकेतात्मक शैली का होना आवश्यक होता है।

5.7.3.6 मनोवैज्ञानिक शैली -

आधुनिक काल के उपन्यासकारों में मनोवैज्ञानिक शैली का प्रयोग प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है। फ्रायड, एडलर एवं युंग इन विद्वानों ने मनोविज्ञान को महत्त्वपूर्ण माना। मानव की सभी क्रियाएँ उसके व्यक्तित्व से उपजी होती है। साहित्य का संबंध मानव मन से प्रगाढ़ रूप में है अतः साहित्यकारों द्वारा प्रस्तुत चरित्र चित्रण पर आधुनिक मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव प्रमुख रूप में परिलक्षित होता है। मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है और साहित्यकार मनोवैज्ञानिक शैली के प्रयोग से मानव व्यवहार का विश्लेषण करता है। हिंदी के कुछ प्रमुख मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों में अज्ञेय, जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, मन्नू भंडारी आदि के नाम लिए जाते हैं।

'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने मनोवैज्ञानिक शैली का आधार लिया हुआ दिखाई देता है। विवेच्य उपन्यास का पात्र काली भूख से इतना बेहाल

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 97

होता है कि कुत्ते ने अधखायी रोटी भी वह झाड-फूँककर खाने लगता है। इतने में वहाँ मिस्तरी संतासिंह आ जाता है। मिस्तरी संतासिंह को देखकर "काली रोटी छोड़कर इस तरह खड़ा हो गया जैसे उसे देख कुत्ते ने रोटी छोड़ दी थी।"[1] उक्त कथन से काली की मानसिक स्थिति को उजागर किया गया है।

मनोवैज्ञानिक शैली के माध्यम से लेखक जगदीशचंद्र ने विवेच्य उपन्यास के पात्रों की मानसिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। मानव के मन में चल रहे अंतर्द्वंद्व को बाहर लाना ही उपन्यासकार अपना कर्तव्य समझता है।

5.7.3.7 संवाद शैली -

रचनाकार अपनी रचना में पात्रों के माध्यम से अपनी अनुभूति की अभिव्यक्ति करता है। पात्रों के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए संवाद-शैली का प्रयोग किया जाता है। संवाद शैली के कारण उपन्यास के कथ्य में नाट्यात्मकता, सजीवता, स्पष्टता एवं रोचकता आ जाती है। पात्रों के संवादों द्वारा उपन्यासकार का व्यक्तित्व स्पष्ट होता है। लेखक जगदीशचंद्र ने 'धरती धन न अपना' उपन्यास में प्रसंगानुरूप पात्रों की संवाद-योजना की है।

विवेच्य उपन्यास का प्रमुख पात्र काली छह साल शहर रहकर वापस गाँव आता है। गाँव वापस आ जाने पर काली और उसकी चाची दोनों में जो संवाद होता है वह अत्यंत हृदयग्राही है। चाची काली से कहती है-

"काका, मुझे सिर्फ तेरा ही आसरा है। तेरे सहारे उड़ती फिरती हूँ। तू आ गया है तो यह कोठड़ी भी भरी-भरी मालूम होती है। तू बाहर था तो यह कोठड़ी मुझे उजाड़ दिखाई देती थी।"[2]

"चाची अब मैं कभी एक पल के लिए भी तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊँगा। तुम्हें राज कराऊँगा। खाट से नीचे पाँव नहीं धरने दूँगा।"[3]

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 168
2. वही, पृष्ठ - 13
3. वही, पृष्ठ - 13

उक्त संवाद के माध्यम से वात्सल्यमयी ममता का चित्रांकन करने में जगदीशचंद्र को काफी सफलता मिली है। अन्य संवादों में चौधरी-दलितों का संवाद, दलित स्त्रियों का संवाद, काली-ज्ञानो का संवाद आदि का चित्रण यथातथ्य किया गया है।

ज्ञानो और काली के प्रेमप्रसंग के संवादों का भी चित्रण किया गया है। काली गाँव से निराश होकर पुनः शहर जाना चाहता है। इस पर ज्ञानो क्रुद्ध स्वर में काली से कहती है- ''मैं तो समझती थी कि तू जिगरवाला आदमी है। तू आसानी से दबनेवाला नहीं है। तेरे से गली के कुत्ते अच्छे हैं जो मारने पर आगे घूरते तो हैं।''[1] इससे स्पष्ट होता है कि लेखक जगदीशचंद्र ने प्रसंगानुरूप एवं पात्रों के अनुसार संवाद-शैली का प्रयोग किया है।

5.7.3.8 पूर्वदीप्ति शैली -

पूवदीप्ति शैली को अंग्रेजी में 'फ्लैश-बैक' शैली कहते हैं। इनमें जीवन में घटित घटनाओं का वर्णन स्मृति-तरंगों के रूप में किया जाता है। इस बारे में डॉ. प्रतापनारायण टंडन लिखते हैं- ''उपन्यासकार कथा कहते-कहते अकस्मात प्रसंग के सूत्र को किसी विगत घटना के सूत्र से जोड़ देता है, जिससे कथा की गति विकास की ओर अग्रसर होती है।''[2]

'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग विभिन्न स्थानों पर किया है। विवेच्य उपन्यास में दलित स्त्री ताई निहाली अपनी पूर्व स्मृति-तरंगों के माध्यम से काली के माता-पिता का परिचय इस प्रकार से करती है- ''जीतू की तरह काली का बाप भी बहुत छोटी उमर में ही मर गया था। काली बेचारे को तो उसकी शक्ल भी याद नहीं होगी। इसका बाप बहुत हौसलेवाला आदमी था। पहलवानी करता था। इज्जतदार बन्दा था। चौधरी भी कम ही उसके मुँह आते थे। थाना तक उससे दबता था। शरीफों का शरीफ और बदमासों का बदमास था। काल की माँ भी उसके बाप के मरने के दो साल बाद ही चल बसी थी।''[3] इस प्रकार लेखक जगदीशचंद्र ने पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया दिखाई देता है।

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 209
2. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास, पृष्ठ - 198
3. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 31

इसके अतिरिक्त सन्तासिंह तथा लालू पहलवान अपनी-अपनी कहानी पूर्वदीप्ति शैली के माध्यम से कहते हैं। अतः विवेच्य उपन्यासों में पूर्वदीप्ति शैली का भी प्रयोग हुआ है।

इस प्रकार लेखक जगदीशचंद्र ने विभिन्न शैलियों का प्रयोग 'धरती धन न अपना' उपन्यास में किया दिखाई देता है। विभिन्न शैलियों के प्रयोग से लेखक ने रचना में रोचकता तथा सुगठितता लाने का प्रयास किया है। विभिन्न शैलियों के प्रयोग से लेखक जगदीशचंद्र के शैली कौशल का भी ज्ञान हमें होता है।

5.8 सूक्तियाँ -

विभिन्न संतों तथा महान व्यक्तियों के कथनों को सूक्तियाँ कहा जाता है। इन सूक्तियों के प्रयोग से भाषा का प्रभाव स्पष्ट होता है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने भी अनेक सूक्तियों का प्रयोग किया है। वे इस प्रकार हैं -

"गरीबी आदमी का जमीर खत्म कर देती है।"[1]

"जिसके पास चादर है, वही चौधरी है।"[2]

आदि सूक्तियों का प्रयोग विवेच्य उपन्यास में किया हुआ दिखाई देता है। सूक्तियों के प्रयोग से लेखक का भाषा पर अधिकार तथा भाषा का कितना ज्ञान है। इस पर भी प्रकाश पड़ता है।

5.9 अलंकार योजना -

रचना को रोचक एवं सौंदर्यमय बनाने के लिए रचनाकार विभिन्न अलंकारों का प्रयोग करता है। आभूषण के बिना कोई स्त्री सुंदर नहीं हो सकती उसी प्रकार अलंकारों के बिना रचना का सौंदर्य आँका नहीं जा सकता। रचना में अलंकार का प्रयोग होना आवश्यक होता है। अलंकारों के प्रयोग से भाषा में रोचकता एवं सौंदर्य निर्माण होता है, परंतु रचनाकार को यह ध्यान रखना चाहिए कि रचना में अलंकारों की ज्यादती न हो।

'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने अलंकारों का प्रयोग किया है। विवेच्य उपन्यास में अलंकारों का प्रयोग इस प्रकार हुआ है -

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 112
2. वही, पृष्ठ - 60

"कानों के पर्दे तरबूज के खप्पर की तरह मोटे।"[1]

उक्त कथन में कानों के पर्दे की तुलना तरबूज के खप्पर से की है। यहाँ उपमा अलंकार प्रयुक्त हुआ है।

विवेच्य उपन्यास में दरवाजे पर ज्ञानो के दस्तक देने पर काली दरवाजा खोलता है। इसका अंकन इस प्रकार किया है- "उसने इस नर्मी से सांकल उतारी जैसी किसी मुटियार के सिर से चुन्नी उतार रही हो।"[2] उक्त कथन में सांकल उतारने की क्रिया की तुलना मुटियार के सिर से चुन्नी उतार लेने से की गई है।

उक्त कथनों से स्पष्ट होता है कि लेखक जगदीशचंद्र ने उपमा अलंकार का प्रयोग किया हुआ है। अतः अलंकारों के प्रयोग से प्रस्तुत उपन्यास की रोचकता बढ़ने में सहायता मिली है।

5.10 दलित समाज में दी जानेवाली गालियाँ -

दलित समाज की भाषा में गालियों का प्रयोग हर वाक्य में कहीं-न-कहीं जरूर दिखाई देता है। किसी झगड़े या शोर-शराबे में एक-दूसरे पर गालियों की बौछार सुनाई देती है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में भी लेखक जगदीशचंद्र ने दलित समाज में दी जानेवाली गालियों को ज्यों-की-त्यों उतारा है। सीधी-साधी बात में भी गाली का सहारा लेते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में दलित ही नहीं बल्कि उच्चवर्गीय समझे जानेवाले चौधरी जमींदार जैसे लोग दलितों को "कुत्ता चमार"[3] के नाम से संबोधित करते हैं। हर दिन "कुत्ते के पुत्तर"[4], "हराम की औलाद"[5] जैसी गालियों को सुनना पड़ता है।

दलित स्त्रियों में जब झगड़े होते हैं तो वे एक-दूसरे के ऊपर नैतिकता को

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 45
2. वही, पृष्ठ - 192
3. वही, पृष्ठ - 22
4. वही, पृष्ठ - 20
5. वही, पृष्ठ - 20

लेकर कीचड़ उछालते हुए नजर आती हैं। "रांड"[1], "कंजरी"[2], जैसी गालियाँ स्त्रियाँ एक-दूसरे को देती हैं।

आज भी अगर हम देहातों में दलित समाज में देखेंगे तो उनकी भाषा में गालियों का प्रयोग जरूर दिखाई देता है। लेखक जगदीशचंद्र ने दलित समाज में दी जानेवाली गालियों का यथावत चित्रण किया है। उच्चवर्गीयों द्वारा दी जानेवाली गालियाँ सभी चमादड़ी के लोग सुनते हैं। थोड़ी देर के लिए खी-खी हँसते हैं, परंतु इन गालियों का विरोध करने की शक्ति किसी में भी नहीं है। अकेला काली ऐसा पात्र है जो इस व्यवस्था का विरोध करता है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित दलितों को गालियों की आदत-सी हुई है। वे सिर्फ सुनते रहते हैं। इस प्रकार लेखक जगदीशचंद्र ने दलित समाज में दी जानेवाली गालियों का चित्रण किया है।

निष्कर्ष -

लेखक जगदीशचंद्र स्वयं उच्चवर्गीय होते हुए भी उन्होने 'धरती धन न अपना' उपन्यास में दलित समाज के यथार्थ को अंकित किया है। पंजाब क्षेत्र के दलित-समाज में बोली जानेवाली बोली-भाषा का यथावत चित्रण किया गया है।

'धरती धन न अपना' उपन्यास का भाषा-शिल्प अत्यंत रोचक, प्रभावपूर्ण एवं पात्रानुकूल रहा है। विभिन्न भाषाओं के शब्दों के प्रयोग से भाषा की प्रभावात्मकता स्पष्ट होती है। भाषा-शिल्प के अंतर्गत शब्द-प्रयोग का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है। रचना की सफलता शब्द-प्रयोग पर आधारित होती है। उचित शब्द प्रयोग करना लेखकीय कौशल होता है। शब्द-प्रयोग के अंतर्गत विभिन्न भाषाओं के शब्द उनमें-तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, अन्य शब्द आदि शब्दों का उचित प्रयोग होता है।

आलोच्य उपन्यास का कथाक्षेत्र पंजाब भूमि है। जिससे उपन्यास में वहाँ की लोकभाषा में प्रचलित विभिन्न मुहावरें, कहावतें आदि का प्रयोग किया गया है। मुहावरों एवं कहावतों से रचना में रोचकता एवं सुगठितता आती है। मुहावरों और कहावतों के प्रयोग से

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 74
2. वही, पृष्ठ - 74

लंबे-चौड़े वर्णन करने पर रोक लगाई जाती है। इसलिए रचना में विभिन्न भाषा के भी मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग हुआ है।

भाषा-शैली की दृष्टि से विचार करे तो विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है। जिनमें प्रतीकात्मक, वर्णनात्मक, प्रश्नोत्तर, गीतात्मक, सांकेतिक, मनोवैज्ञानिक शैली, पूर्वदीप्ति शैली आदि शैलियों का प्रयोग किया गया है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास का कथाक्षेत्र आंचलिक होने के कारण आंचल की भाषा का भी प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया हुआ दिखाई देता है। भाषा-शैली की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास सफल माना जाता है।

प्रसंगानुरूप विभिन्न सूक्तियाँ तथा अलंकारों का भी प्रयोग किया हुआ है। जगदीशचंद्र ने 'धरती धन न अपना' उपन्यास में भाषा-शिल्प की ओर ध्यान दिया है। पंजाबी क्षेत्र के विभिन्न कहावतों, मुहावरों के प्रयोग से उपन्यास को परिवेश से जोड़ने का प्रयास किया है। दलितों में प्रचलित बोली-भाषा को ज्यों की त्यों उतारने का प्रयास लेखक जगदीशचंद्र ने प्रस्तुत उपन्यास में किया है। भाषा-शिल्प की दृष्टि से 'धरती धन न अपना' यह सफल उपन्यास है ऐसा हम कह सकते हैं।